e-ISSN No. 3107/6564

भाग 02 अंक 01 / जनवरी 2026

e-ISSN No. 3107/6564

NATIONAL AGRICULTURAL STUDENTS ORGANIZATION

हिंदी मासिक

कृषि पत्रिका

(कृषि छात्रों, किसानों एवं कृषि वैज्ञानिक हेतु समर्पित)

Contact to us - E-mail: editorinchief@naso.org.in / website: www.naso.org.in

e-ISSN No. 3107/6564

डॉ. भाष्कर दुबे
मुख्य संपादक
ediotorinchief@naso.org.in

डॉ अनुराग रजनीकांत तायडे
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कीट विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ. अमित कुमार
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि अर्थशास्त्र विभाग, SHUATS,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनुग्रह साक्षी
संपादक
editor@naso.org.in
सहायक प्रोफेसर - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

निखिल तिवारी श्रीदत्त
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - कृषि विस्तार एवं संचार विभाग,
शुआट्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

शशांक सिंह
सह-संपादक
coeditor@naso.org.in
टीचिंग एसोसिएट - शस्य विज्ञान विभाग, शुआट्स,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

प्रकाशक –
डॉ. भाष्कर दुबे
पत्रिका का प्रकार - हिंदी, मासिक, कृषि पत्रिका
पंजीकृत पता - अतरौरा मीरपुर, सोनपुरा, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) 230124
कार्यालय - गंगोत्री नगर, SHUATS कृषि विश्वविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211007
Website – www.naso.org.in
E-mail – editorinchief@naso.org.in
Contact – 9936902749 / 7068708058

e-ISSN No. 3107/6564

ज्योतिष द्वारा भू-जल विमर्श

डॉ० खुशेंद्र देव चतुर्वेदी
सहायक प्रोफेसर, ज्योतिष महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी, मध्य प्रदेश
E-mail - khushjyotish@gmail.com

भारत की कृषि व्यवस्था सदियों से जल पर आधारित रही है। वर्षा पर निर्भर खेती की अनिश्चितता को संतुलित करने के लिए हमारे पूर्वजों ने भू-जल (भूमिगत जल) को स्थायी सिंचाई स्रोत के रूप में विकसित किया। आधुनिक भू-वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में जल की खोज केवल अनुभव, प्रकृति-अवलोकन और ज्योतिषीय सिद्धांतों के आधार पर की जाती थी। यही परंपरा **"ज्योतिष द्वारा भू-जल विमर्श"** के नाम से जानी जाती है।

इस विषय का प्रामाणिक वर्णन प्राचीन ग्रंथ बृहत्संहिता में मिलता है, जिसके रचयिता महान खगोलज्ञ और ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर थे। उन्होंने प्राकृतिक संकेतों, दिशा-निर्धारण और ग्रह-स्थिति के आधार पर भू-जल की खोज का विस्तृत विवरण दिया है।

भू-जल और भारतीय कृषि का संबंध

भारत जैसे विशाल और विविध जलवायु वाले देश में कृषि की सफलता जल उपलब्धता पर निर्भर है। परंपरागत कृषि प्रणाली में कुएँ, बावड़ियाँ, तालाब और झीलें सामुदायिक जीवन का आधार थीं।

भू-जल का महत्व इसलिए अधिक रहा क्योंकि—

- यह वर्षा के अभाव में भी उपलब्ध रहता है।
- फसल की नियमित सिंचाई सुनिश्चित करता है।
- पशुपालन और घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करता है।

प्राचीन काल में किसान कुआँ खोदने से पहले भूमि का निरीक्षण करते थे। यह निरीक्षण केवल भौतिक नहीं, बल्कि ज्योतिषीय गणना के साथ जुड़ा होता था।

ज्योतिषीय सिद्धांत और पंचमहाभूत

भारतीय ज्योतिष पंचमहाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—पर आधारित है। जल तत्व को जीवन का आधार माना गया है।

ज्योतिषीय दृष्टि से -

- **चंद्रमा** जल और नमी का प्रतीक है।
- **शुक्र** उर्वरता और समृद्धि का कारक है।
- **बृहस्पति** वृद्धि और संरक्षण से संबंधित है।
- **शनि** भूमिगत संरचनाओं और गहराई का सूचक माना जाता है।

भूमि या क्षेत्र विशेष में इन ग्रहों की स्थिति का अध्ययन कर जल की उपलब्धता का अनुमान लगाया जाता था। यह परंपरा वैज्ञानिक उपकरणों के अभाव में दिशा-निर्देशक का कार्य करती थी।

प्राकृतिक संकेत: अनुभवजन्य विज्ञान

बृहत्संहिता में 'उदकार्गल' अध्याय में भू-जल खोज के अनेक संकेत दिए गए हैं। ये संकेत प्रकृति के सूक्ष्म अवलोकन पर आधारित थे।

1- वनस्पति संकेत

- गर्मी के मौसम में भी जहाँ हरियाली बनी रहे
- पीपल, वट, नीम जैसे गहरी जड़ वाले वृक्ष
- विशेष प्रकार की घास या झाड़ियों की अधिकता

ऐसी भूमि के नीचे सामान्यतः जल स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा पाया जाता है।

e-ISSN No. 3107/6564

2- मिट्टी और भूमि की बनावट

- काली या गहरी मिट्टी
- भूमि का ठंडा या नम होना
- हल्की धँसाव वाली सतह

मिट्टी का रंग और नमी जल की उपस्थिति का संकेत देते हैं।

2- जीव-जंतु व्यवहार

- दीमक या चींटियों के टीले
- मेंढकों की अधिकता
- पशुओं का किसी स्थान पर बार-बार जाना

ये संकेत बताते हैं कि उस स्थान के नीचे जल स्रोत हो सकता है।

दिशा और मुहूर्त का महत्व

ज्योतिष में दिशा और समय को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

- **ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा)** को जल तत्व की दिशा कहा गया है।
- शुभ नक्षत्रों और ग्रह-स्थिति में कुआँ या तालाब की खुदाई को लाभकारी माना जाता था।
- वर्षा से पूर्व ग्रहों की चाल देखकर वर्षा और जल संचय का अनुमान लगाया जाता था।

यह प्रणाली कृषि कार्यों की योजना बनाने में सहायक थी।

कृषि प्रबंधन में उपयोग

ज्योतिषीय भू-जल विमर्श का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता था -

- ✔ सिंचाई स्रोत का सही स्थान चयन
- ✔ कुएँ या तालाब की खुदाई में संसाधन बचत
- ✔ फसल चक्र का निर्धारण
- ✔ वर्षा अनुमान के आधार पर बीज बुवाई

इस प्रकार यह केवल आध्यात्मिक विश्वास नहीं, बल्कि कृषि प्रबंधन का व्यावहारिक उपकरण था।

आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आज भू-जल की खोज के लिए आधुनिक तकनीकें उपलब्ध हैं—

- ➢ भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण
- ➢ रिमोट सेंसिंग
- ➢ सैटेलाइट इमेजिंग
- ➢ विद्युत प्रतिरोधकता परीक्षण

ये विधियाँ अधिक सटीक और प्रमाणिक हैं। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि प्राचीन संकेत पूर्णतः निराधार नहीं थे।

उदाहरण के लिए—

- जहाँ गहरी जड़ वाले वृक्ष पनपते हैं, वहाँ जल उपलब्धता अधिक होती है।
- भूमि की नमी और मिट्टी की संरचना वैज्ञानिक रूप से जल की निकटता दर्शाती है।

अतः पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय अधिक प्रभावी हो सकता है।

वर्तमान जल संकट और समाधान

आज भू-जल स्तर गिर रहा है। अत्यधिक दोहन, अनियमित वर्षा और जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि क्षेत्र प्रभावित हो रहा है।

समाधान के लिए आवश्यक है—

1. वर्षा जल संचयन
2. तालाब और पारंपरिक जल संरचनाओं का पुनर्जीवन
3. माइक्रो-सिंचाई (ड्रिप एवं स्प्रिंकलर)
4. फसल विविधीकरण

e-ISSN No. 3107/6564

यदि ज्योतिषीय संकेतों को प्रारंभिक मार्गदर्शन के रूप में लेकर वैज्ञानिक परीक्षण किया जाए, तो जल खोज की सफलता दर बढ़ सकती है।

निष्कर्ष

“ज्योतिष द्वारा भू-जल विमर्श” भारतीय कृषि परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। यह दर्शाता है कि हमारे पूर्वज प्रकृति और खगोल के गहरे संबंध को समझते थे।

आज के युग में आवश्यक है कि—

- पारंपरिक ज्ञान को सम्मान दिया जाए
- उसे वैज्ञानिक कसौटी पर परखा जाए
- और जल संरक्षण को कृषि नीति का केंद्र बनाया जाए

जल ही कृषि की आत्मा है। यदि जल सुरक्षित रहेगा, तो किसान समृद्ध रहेगा और राष्ट्र भी सशक्त बनेगा।

जल संरक्षण ही भविष्य की कृषि सुरक्षा है।